पाठ्य सामग्री

17-04-2021

स्नातक प्रतिष्ठा, खण्ड-प्रथम, विषय - मैथिली, पत्र - प्रथम
प्राध्यापक - प्रवीण कुमार प्रभंजन (स.प्रा.) मैथिली विभाग
(उदयनाचार्य रमेश्वर कॉलेज रो सड़ा (समस्तीपुर)

शेष पाठ्यांश

मैथिलीक पहिल महाकाव्य कृष्णजन्म अछि जे समस्त काव्य चौपई छन्दमे लिखल गेल अछि वर्णनात्मक शैली मे कथाक रचना भेल अछि। मैथिली भाषाक लोकोक्ति आ ठेठ शब्दक प्रयोग सर्वाधिक भेल अछि। वर्णित वस्तु जनसामान्यक हृदय केँ मर्मस्पर्शी करबामे सक्षम प्रस्तुति भेल अछि। एहि महाकाव्यमे श्रीकृष्ण भगवानक बाल्य कौतुक वात्सल्य रसक मौलिकता सिद्ध भेल अछि। साहित्य महत्व वात्सल्य रसकेँ दशम रसक संज्ञा देल जाइत अछि। हिन्दी साहित्यमे जहिना सूरदास छथि ओहिना मैथिली साहित्यमे कविवर मनबोध ख्याति अर्जित कएलनि अछि। पाठकक सहज आकर्षण लोकभाषाक प्रयोग सँ भेल अछि। उदाहरणार्थ द्रष्टव्य अछि निम्न प्रयोग —

1. कहबी — बामन पोथी छत्री तीर।
— नेरू हेरयने जेहने धेनु गाय।
— कागपुत्र केओ रहल न गाम।

2. ठेठ शब्दक प्रयोग - हेंठ, झकझक, बेओत, समदावाड़ी, अड़राय, गोड़गर, टंगझीक, मुँहबौआ, इत्यादि।

3. लोकोक्तिक प्रयोग - कर्मक लिखल मेटय के पार।
- गोबर-गणेश गोट किछु नहि जान।
- कटगर तरु केओ अँगना राख।

उपर्युक्त वर्णन एहि महाकाव्यक लोकप्रियता मे सहायक सिद्ध होइत अछि। शब्द विन्यास आ वाक्य संरचना रोचक अछि। अनुपम कथाधारावाहिता प्रसाद गुण सँ ओत-प्रोत अछि। एहि महाकाव्य मे अलंकारक सहज प्रयोग भेल अछि।

उदाहरण - गुड़कल गड़कल भिड़कल जाय — अनुप्रास
कतला तरक जकाँ खसु अड़राय — उपमा
नेरू हेरयने जेहने धेनु गाय — उपमा

मिथिला-मैथिल संस्कृति परम्पराक अनुकूल वर्णनक उल्लेख कृष्णजन्म महाकाव्यक विशेषता अछि। तत्कालीन मैथिल समाजमे नेनाक जन्मक अवसर पर हँकार देब, तेल-सिन्दुर बाँटब, सोहर गायब, चुमाओन सन उत्सवक वर्णन भेल अछि। भदबाक विचार आ शुद्धिकरण लेल गंगाजलक छिड़काबक प्रथा प्रचलित व्यवहारक वर्णन भेल अछि। वस्तुतः मिथिलाक लोक जनजीवनक संस्कृति मूलक प्रतीक रूपमे स्वाभाविक वर्णन भेल अछि।

वस्तुतः मैथिली भाषा साहित्यमे मनबोध रचित कृष्णजन्म महाकाव्यक महत्त्व, नवीन काव्य धाराक साहित्यिक प्रवाह प्रवाहित भेल अछि। महाकवि अनुप्राणित शृंगाररस प्रधानक लोकप्रियता कें भक्ति आ वात्सल्यमय कऽ देलनि अछि। महाकवि विद्यापतिक रचना शैली कें छोड़ि नव काव्य-रचना शैलीक प्रवर्तक रूपमे ख्याति अर्जित कएलनि अछि। कृष्णजन्म महाकाव्यमे प्रसाद गुण परिपूर्ण, मधुर ललित लावण्य प्रसून, अलंकार अलंकृत, रस सरल सिंचित, भाव बोधगम्य लोक जीवन -क सुलभ चित्रण भेल अछि। प्राचीनता ओ नवीनताक सन्धि स्थल पर ठाढ़ मनबोधक कृष्णजन्म महाकाव्यक भाव ओ भाषा शैलीक संबंधमे भाषा विद् डा० ग्रियर्सन लिखलनि अछि—

"The poem is deserving of special attention as an example of the Maithili of the last century offering a connectiong link between the old Maithili of Vidyapati and the modern Maithili of Harshnath Jha and the other writers of the present day."

अस्तु 'कृष्णजन्म' महाकाव्यक अध्ययन आ अवलोकन सँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे ठेंठ मैथिली भाषाक प्रयोग, मिथिलाक कहबी, मुहावरा आ लोकोक्तिक प्रयोगक प्रभावसँ मिथिला मे लोकप्रिय सिद्ध भऽ गेल अछि। ताहि लेल मनबोध कें भाषाकवि आ कृष्णजन्म' महाकाव्यक नव भाषा प्रयोग शैलीक नवोन्मेष ग्रंथ कहल जाइत अछि।

⇒ पठित पाठ्यांशक आधार पर निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर अभ्यास

1. कृष्णजन्मक आधार पर मनबोध कविक साहित्यिक परिचय
2. कृष्णजन्मक वैशिष्ट्य लिखू?
3. मनबोध कें भाषाकवि संज्ञा देल जाइत अछि निरूपित करू?
4. कृष्णजन्मक कथा वस्तुक उल्लेख करू?

अतिरिक्त — मिथिलाक्षरक अभ्यास करू?
— मिथिलाक्षरक अभ्यास करू।
इति शुभम्